

# दावानुक श्री जिनकुशल सूरि

जोथपुर से कुछ दूर उक करता है, गढ़ रिवाना। प्राचीन समय में इसे समियाणा कहते थे। यहाँ पर ओंसवाल जैन समाज के सैकड़ों धनाढ़व परिवार रहते हैं। लाल पत्थर की बड़ी जड़नुमा हवेलियाँ। उक-उक हवेली में विशाल संयुक्त परिवार व सेवक, दास-बासियों की चाहुँ-पहल। पास में बड़े-बड़े जिनमें रहते हैं भाय-बैल, रथ-घोड़े, आदि। उसा लगता है, जैसे हर उक परिवार एक रजवाड़ा है। यहाँ के परिवार आधिकरण सम्पद्ध हैं और सम्पद्धता में अप (उकता-संबठन) भी है। आस-पास मुहल्ले-बाँव के लोग बैठे अप-शप करते रहते हैं। किसी की कोई शिकायत, आपस का झगड़ा या कुछ लेन-देन की बातें सबका जिपटारा हो जाता है। मुख्या सेट को शाह जी कहकर पुकारते हैं। उसी बाँव में मंत्री जेसलशाह आतेह आपनी पत्नी जयत्री के साथ विशाल अव्य हवेली में रहते हैं।



प्रातःकाल के समय मंत्री जेसल जी उक चबूतरे पर बड़े पलौंग पर बैठे थे। आस-पास बाँव के अनेक शाह, साहूकार और कास्त-कमीन भी उनके सामने बैठे हुए थे। तभी ऊपर हवेली से ढौड़ती हुई उक दासी आई।



## दादानुक श्री जिनकुशल लूबि

बारहवें दिन पुत्र का नामकरण समारोह किया गया। उयोतिषी ने लृग्न देखकर बताया—

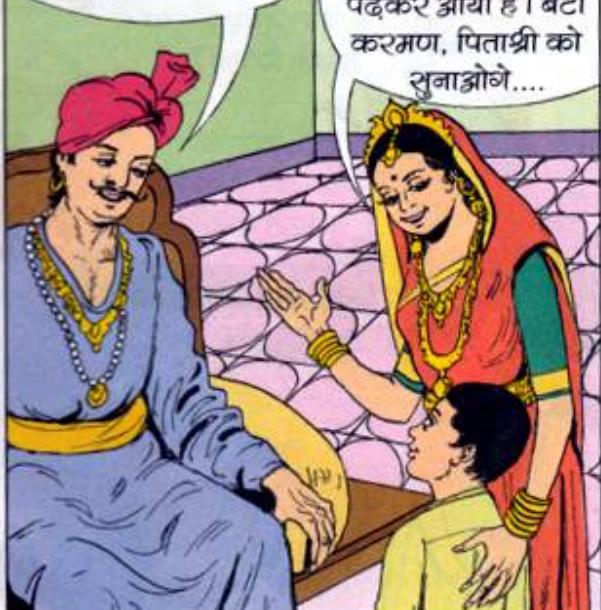


माता जयतश्री बालक करमण को ड्रपने हाथों से बहाकर सुन्दर वस्त्र-बाहने पहवाकर भासु पर काणी टिकी कुप्राती हैं।



एक दिन मंत्री जेसलशाह ने जयतश्री से कहा—

देवी, अब हमारा करमण सात वर्ष का हो रहा है। इसे पाठशाला भेजना चाहिए।



## दादानुक श्री जिनकुशल लूबि

करमण खड़ा हुआ और बोलने लगा—

